चीन और भारत

उपनिवेशवाद के शिकार, पर आज इतने अलग क्यों?

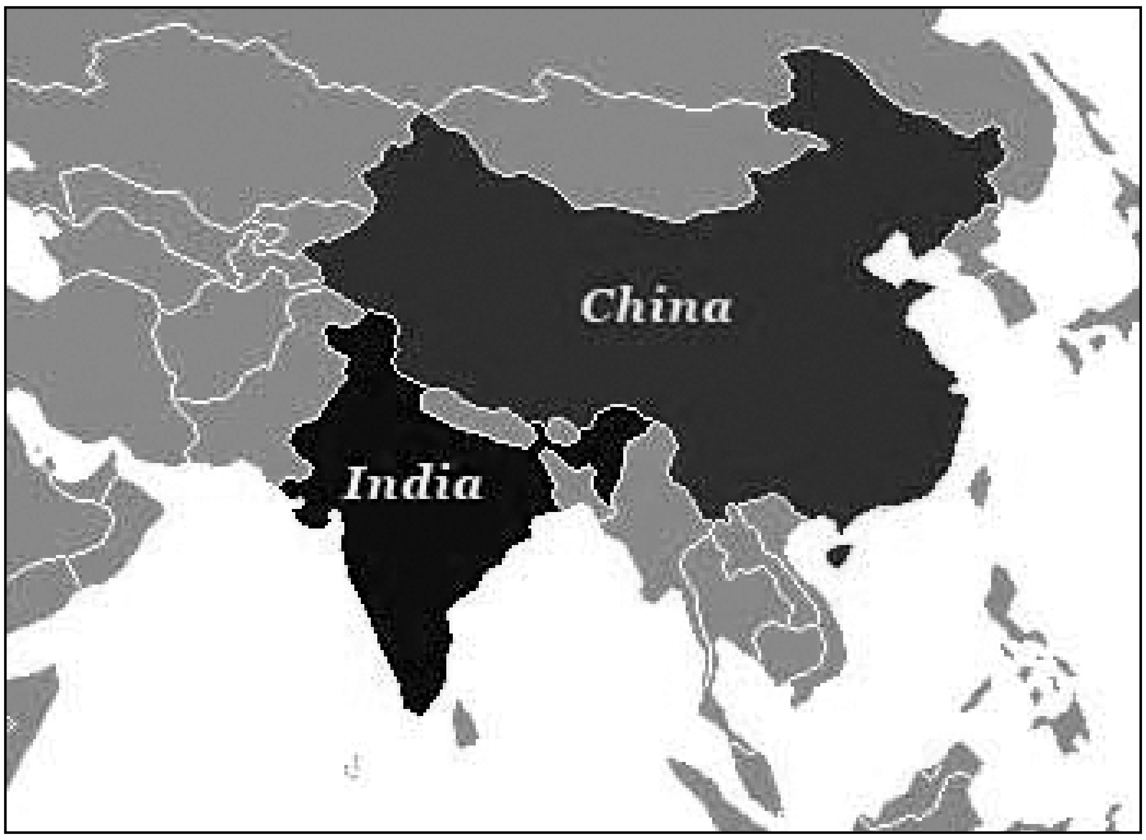

वर्तमान साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था में चीन एक महाशक्ति के रूप में उभरता जा रहा है। चीन में बाज़ार का विकास काफ़ी हो चुका है और अब वह दुनिया के प्रमुख बाज़ारों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। भारत हो या साम्राज्यवादी महाशक्ति अमेरिका, हर जगह उसके सस्ते उपभोक्ता उत्पाद छा गये हैं। खिलौनों से ले कर मोबाइल फ़ोनों और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के साथ दुग्ध उत्पादों को लेकर भी वह दुनिया के बाज़ार में हाज़िर है। चीन को विदेशों के स्थानीय बाज़ार की इतनी समझ है कि रक्षाबंधन जैसे त्योहार पर वह सस्ती राखियों से भारतीय बाज़ार को पाट देता है और दीपावली में गणेश और लक्ष्मी जी के फ्रेम जड़े फ़ोटो 'मेड इन चाइना' होते हैं।

स्पष्ट है, चीन विकास के गुब्बारे पर काफ़ी ऊपर तक जा रहा है। आज चीन सैन्य क्षेत्र में भी किसी से कम नहीं है। भारतीय सेनाधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि सैन्य मामलों में वह हमसे कम से कम तीन गुणा ज्यादा ताकतवर है। आज तक दुनिया में सैन्य ताकत ही सबसे बड़ी ताकत रही है। चीन के साथ हमारा सीमा विवाद भी है जो काफ़ी प्रयासों के बावजूद आज तक नहीं सुलझाया जा सका है।

सबसे खास बात यह है कि चीन अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिये किसी का मोहताज़ नहीं है। उसे अपने लिये दूसरे देशों से न तो अनाज़ मंगाना पड़ता है और न ही चीनी, जैसे कि 'कृषिप्रधान' भारत को। हथियारों के लिये भी उसे अमेरिका, रूस और फ्रांस जैसे देशों का मुंह नहीं ताकना पड़ता है जबकि भारत को अपनी सेना मजबूत करने के लिये लगातार उपरोक्त देशों से हथियार खरीदने पड़ते हैं और हथियारों की इन खरीद में भी भारी घोटाला होता है। दलाली लेने-देने का खेल जम कर होता है। यही नहीं, विकास के जितने काम होते हैं जैसे सड़कें बनाना आदि, विदेशी कर्ज एवं सहयोग के बिना नहीं होते और इनमें भी देशी एवं विदेशी एजेंसियों के 'खाने-पीने' का अच्छा-खासा जुगाड़ होता है। वैसे, राजीव गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में यह घोषित कर दिया था कि विकास के लिये सरकारी खज़ाने से जो पैसा निकलता है, उसमें एक रुपये में जनता तक 15 पैसे ही पहुंचते हैं। इधर उनके पुत्र राहुल गांधी ने कहा है कि अब 15 पैसे भी नहीं, सिर्फ़ 10 पैसे पहुंचते हैं। यानी रुपये में 90 पैसे ऊपर ही 'खा-पका' लिये जाते हैं।

भारत और चीन, दोनों लंबे समय तक औपनिवेशिक गुलामी के शिकार रहे। औपनिवेशिक गुलामी के दुष्चक्र में फंसने के पूर्व ये पूरी तरह आत्मनिर्भर थे और यूरोप के बाज़ारों में इनका सिक्का चलता था। ढाका का मलमल, दक्षिण भारत के मसाले और चीन के रेशम व चाय की यूरोप के बाज़ारों में भारी मांग थी और इसके व्यापार में यूरोपीय व्यापारियों को भारी मुनाफ़ा होता था, पर भारत और चीन से यह सब खरीदने के लिये यूरोपीय व्यापारियों को सोना और चांदी देना पड़ता था। इस तरह व्यापार संतुलन भारत और चीन के पक्ष में था।

औपनिवेशिक दौर की प्रारंभिक अवस्था में एक फ्रांसीसी यात्री बर्नियर भारत आया था और उसने लिखा था कि भारत एक ऐसा गड्ढा है जहां दुनिया भर से सोना और चांदी आकर गिरता है। उसने यह भी लिखा था कि आगरा और ढाका के आगे लंदन और पेरिस देहात की तरह लगते हैं। यह अतिशयोक्ति नहीं कि भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था।

इसी भांति चीन में मिंग साम्राज्य अपने आप को 'स्वर्गिक साम्राज्य' कहता था और उसका मानना था कि उसे दुनिया के दूसरे देशों से किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, बल्कि दूसरे देशों को ही उनकी चीजों की जरूरत है। यह सच था। भारत और चीन जैसे देश उस दौरान पूरी तरह आत्मनिर्भर थे। इंगलैंड और यूरोप के अन्य देशों में यह 'व्यापारिक पूंजीवाद' का दौर था। पूंजीवाद चाहे किसी भी दौर का हो, उसकी प्रवृत्ति लुटेरी होती है।

अपने इतिहास के माध्यम से हम जानते हैं कि भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी ने कैसी लूट मचाई। शासकों में फूट डाल कर, मुख्य शासक को युद्ध में साम-दाम-दंड-भेद आदि नीतियां अपना पराजित कर उससे दीवानी यानी कर वसूलने का अधिकार प्राप्त कर लिया और यहीं से लूटे गये कर के एक हिस्से से मलमल और मसाले खरीद कर दुनिया के बाज़ारों में बेचने लगा। यह एक ऐसा व्यापार था जिसमें उसे एक पैसे की पूंजी लगानी नहीं पड़ती थी और सारा मुनाफ़ा ही मुनाफ़ा था। इसी कर की लूट से भारत में वह अपनी सेना रखता था, अपनी कंपनी के कर्मचारियों और अफ़सरों को वेतन देता था और सारे शासन संबंधी खर्चे करता था। यानी 'हर्रे लगे न फिटकिरी, रंग चोखा आ जाये।'

बाद में जब इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति हुई तो उसे यहां से कपड़े खरीदने की जरूरत नहीं रह गई। वह अपने यहां फ़ैक्ट्रियों में कपड़े का उत्पादन करने लगा। अब उसे कच्चे माल की जरूरत हुई जिसकी पूर्ति वह भारत से करता था। तैयार माल बेचने के लिये भारत और दूसरे उपनिवेश उसके प्रमुख बाज़ार बन गये, क्योंकि फ़ैक्ट्री में बनने वाला कपड़ा करघे से बुने जाने वाले कपड़े से सस्ता होता था। इसके अलावा उसे कपड़ों को रंगने के लिये नील की जरूरत पड़ती थी। तब उसने किसानों को जबरदस्ती अनाज़ की जगह नील उगाने पर विवश किया और भारत में अकालों की एक श्रृंखला शुरू हो गई। नील उगाने वाले किसानों का शोषण हर हदों को पार कर गया। उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी ने अपने आंदोलन की शुरुआत चंपारण में निलहे किसानों की समस्या को लेकर ही की थी। यहां हमारा उद्देश्य औपनिवेशिक युग के विभिन्न चरणों को दिखाना नहीं है, प्रसंगवश उसका यथास्थान उल्लेख किया गया है। चीन में जब रेशम और चाय के लिये अंग्रेज़ों को सोना-चांदी देना पड़ रहा था तो उन्होंने इसका एक अलग रास्ता निकाला। वे भारत और अफ़गानिस्तान में अफ़ीम की खेती करवाने लगे और उस अफ़ीम को तस्करी के माध्यम से चीन पहुंचाने लगे। उन्होंने चीन में लोगों में अफ़ीम खाने की आदत डलवाई और इस तरह वहां का धन हड़पने लगे। चीन में अंग्रेज़ों के 'सद्प्रयासों' से अफ़ीम का नशा करने की प्रवृत्ति इतनी ज्यादा बढ़ी कि जिसे देखिये, हर दूसरा-तीसरा व्यक्ति अफ़ीम के नशे में डूबा नज़र आता था। अब जब सारे लोग़ नशे में डूबे हों तो काम-धंधा कैसे चले? परिणामस्वरूप चीन में हर तरह के उत्पादन में भारी गिरावट आई। लोग़ों को भोजन मिलना दूभर हो गया। इधर अफ़ीम खरीदने के लिये पैसा चाहिये। परिणामस्वरूप चोरी, जेबकतरी, वेश्यावृत्ति और छोटे-बड़े अन्य अपराधों में बेतहाशा वृद्धि हुई। चीन का परंपरागत सामाजिक ढांचा चरमराने लगा।

जब स्थिति एकदम विकराल हो गई और राजदरबार में भी दरबारी अफ़ीम की पीनक में डूबने लगे तो सम्राट की आंखें खुलीं। उन्हें महसूस हुआ कि सारी बदमाशी अंग्रेज़ों की है। उन्होंने अफ़ीम लाने वाले जहाजों को जब्त करने का आदेश दिया। उनके आदेश पर अफीम से भरा एक जहाज पकड़ा गया और उसमें मौजूद सारी अफ़ीम को जला दिया गया।

इस पर अंग्रेज़ बड़े ही क्रोधित हुये और उन्होंने बाकायदा चीन में अपने सैनिक उतार दिये इस तरह चीन में पहला अफ़ीम युद्ध शुरू हुआ। अंग्रेज़ों के गोले-बारूद और तोपों वाली सैनिक टुकड़ी के आगे चीन की परंपरागत हथियारों वाली सेना टिक नहीं पाई। चीन हार गया। अफ़ीम को लेकर इस तरह के तीन युद्ध और हुये और सभी में चीन की हार हुई। इसके बाद साम्राज्यवादी देशों ने चीन पर अपना कब्ज़ा कर लिया और जम कर उसे लूटा। चीन में 'खुले द्वार' की नीति अपनायी गई। भारत में लूट का अधिकार किसे मिलेगा, यह तय करने के लिये यूरोप के देशों में युद्ध हुआ था, पर चीन में साम्राज्यवादियों ने युद्ध की जगह यह समझौता करना ज्यादा ठीक समझा कि किस क्षेत्र पर किसका अधिकार रहेगा। इस तरह चीन को अलग-अलग प्रभाव क्षेत्रों वाले इलाकों में बांट दिया गया। वहां इंगलैंड के अलावा अमेरिका, फ्रांस, रूस और जापान का आधिपत्य कायम हो गया।

भारत को जहां एक साम्राज्यवादी ताकत इंगलैंड लूट रहा था, चीन को पांच देश मिल कर लूटने लगे। इस लूट के विरोध में वहां जनता में प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। राजनीतिक जागरण का दौर शुरू हुआ। विदेशों में पढ़े-लिखे लोग़ राष्ट्रवाद की चेतना के प्रभाव में अपने देश को साम्राज्यवादी गुलामी से मुक्त कराने के लिये संगठन बनाने का प्रयास करने लगे। भारत में भी आज़ादी की लड़ाई शुरू हो चुकी थी। चीन में डॉ.सनयात सेन कुओमिंतांग यानी राष्ट्रवादी पार्टी बना कर संघर्ष कर रहे थे, वहीं भारत में कांग्रेस आंदोलन की मुख्य धारा को लेकर चल रही थी। साथ में जनता को शोषण से वास्तविक रूप में मुक्ति दिलाने वाले क्रांतिकारी संगठन हथियारबंद लड़ाई भी लड़ रहे थे। चीन में जनता को शोषण से मुक्ति दिलाने के वाले संगठन मजबूत थे। वहां के नेता माओ-त्से तुंग ने किसानों को यह समझाने में सफ़लता हासिल की थी कि उनके शोषण का कारण क्या है और उसे कैसे खत्म किया जा सकता है। वहां उन्होंने किसानों को हथियारबंद किया था और एक 'जनमुक्ति सेना' बनायी थी। उन्होंने चीन में पूंजीपतियों-धनिकों की पार्टी से काफ़ी संघर्ष किया था और अंतत: उनके प्रभाव को खत्म कर दिया था। पर हमारे देश में ऐसा नहीं हो सका। हमारे देश में क्रांतिकारी तो हुये पर संगठन मजबूत न हो सका और कुछ ग़लतफ़हमियों के कारण आंदोलन की दिशा गलत हो गई। परिणामस्वरूप कांग्रेस जो पूंजीपतियों और धनिकों की पार्टी थी, समझौतापरस्त नीति पर चलने लगी। इसने अंग्रेज़ों से संघर्ष करने की जगह बार-बार उनसे समझौता किया और अंतत: जब अंग्रेज़ दूसरे महायुद्ध में फंसे हुये थे तब उन्हें आसानी से खदेड़े जाने की स्थिति पैदा हो जाने के बाद भी पूंजीपरस्त और अमीरज़ादे व उनके हितों के रखवाले नेताओं ने देश-विभाजन की कीमत पर अंग्रेज़ों से समझौता कर सत्ता-हस्तांतरण करना ही उचित समझा। इस तरह जो सत्ता पहले अंग्रेज़ लुटेरों के हाथ में थी, अब देशी लुटेरों के हाथों में आ गई। पहले जहां अंग्रेज़ किसानों-मज़दूरों और आम जनता का शोषण करते थे, अब देशी पूंजीपति और सामंत ऐसा करने लगे। देश को मिली तथाकथित आज़ादी से आम जनता के जीवन में कोई फ़र्क नहीं आया, बल्कि देश-विभाजन के बाद हुये दंगों में लाखों लाख लोग़ मारे गये, उनकी औरतों के साथ बलात्कार हुये और वे बेघर होकर शरणार्थी बन गये।

लेकिन चीन में माओ-त्से तुंग के नेतृत्व में वहां के मज़दूरों-किसानों ने साम्राज्यवादी ताकतों से लड़ाई लड़ी और शासन पूंजीपतियों के हाथों में नहीं जाने दिया जबकि इसके लिये पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के प्रतिनिधि च्यांग काई शेक ने काफ़ी प्रयास किया और लड़ाइयां भी लड़ीं। पर चीन की जनमुक्ति सेना के आगे वह बार-बार पराजित हुआ। इस तरह चीन में पूंजीपतियों को काबू में कर लिया गया और वहां किसानों-मज़दूरों की सरकार बनी। इस सरकार ने जो व्यवस्था कायम की उसमें किसानों-मज़दूरों का शोषण संभव नहीं हो सकता था। इस शासन में अर्थव्यवस्था का बड़ी तेज़ी के साथ विकास हुआ। भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी खत्म कर दी गई। भारी आबादी के बावजूद सबों को मुफ़्त शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराई गई। चीन में जो व्यवस्था बनायी गई, उसमें एक भी आदमी भूखा-नंगा, अस्वस्थ और अनपढ़ नहीं रह सकता था। यही कारण है कि चीन ने तेज़ी से विकास किया और आज भी जबकि उसकी व्यवस्था में पूंजीवादी तत्व घुस गये हैं और शासन तंत्र में गड़बड़ियां आ गई हैं, वह दुनिया के अधिकांश देशों से आगे है और किसी के आगे हाथ पसारने वाला नहीं।

इधर, भारत के आज़ाद होते ही यहां के नेताओं और पूंजीपतियों ने इसे लूटना शुरू कर दिया। वे नवनिर्माण तो क्या करते, अपना घर भरने में लग गये। इसके अलावा विदेशियों ने भी अपना प्रभाव जमाये रखा, क्योंकि उनसे युद्ध करके उन्हें भगाया नहीं गया था, बल्कि समझौता कर, उनके आगे हाथ पसार कर सत्ता ली गई थी। परिणाम सामने है। देश की 77 फ़ीसदी आबादी 20 रुपये से कम पर गुज़ारा करती है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवायें इतनी महंगी है कि आम लोग़ उसका लाभ उठा नहीं सकते। देश अनाज़ के मामले में भी आत्मनिर्भर नहीं है। लोग़ पैसे-पैसे को मोहताज़ हैं जबकि नेताओं-पूंजीपतियों द्वारा लूटा गया धन स्विट्ज़रलैंड के बैंकों में जमा है। देश में महंगाई इतनी बढ़ गई है कि 80 फ़ीसदी लोग़ों को रोटी-दाल तक मयस्सर नहीं। छोटे-छोटे बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। बच्चों और औरतों का व्यापार होता है। उन्हें खरीद कर दास बना लिया जाता है। जहां भी देखें, धनलोलुप भेड़िये मुंह फाड़े दिखाई पड़ते हैं। गांवों में खेती सबसे ज्यादा घाटे का धंधा है। यही कारण है कि लोग झुंड के झुंड बड़े शहरों में आ कर मज़दूरी की तलाश करते हैं और धक्के खाते हैं, जबकि चीन में स्थिति बिगड़ने पर भी कम से कम यह स्थिति नहीं है, बल्कि यहां से बहुत बेहतर स्थिति है जबकि भारत 1947 में आज़ाद हुआ था और चीन ने साम्राज्यवादी लुटेरों को देश से 1949 में खदेड़ा।

– प्रतिनिधि